A NEWS LETTER OF MAITREE SAMOOH

April to June, 2004

Chirping Sparrow

मैत्री समूह

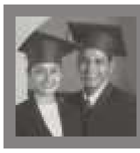
2 YOUNG ACHIEVERS

3 आत्मान्वेषी

4 क्या ये भी चले जाएँगे?

5 THE TRUTH ABOUT TRADITIONS

7 आपके प्रश्न

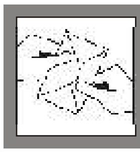
11 आपके पत्र

We Belive

We believe that, education is the only power,which alone can change the whole life of a person and make him stand apart from the mob.

We believe, that knowledge is static, unless it is blended with wisdom, which makes a person dynamic and helps him to utilize the knowledge in the right sense.

We believe that education is the power, which is achieved by sincere hard work, deep thought, discipline and sacrifices.

We believe in endeavoring the knowledge so that it helps in becoming the quality citizen and prove to be the asset of the organization and the country as a whole.

Young Achievers

Abhishek Rawka S/o Shri Mahendra Kumar Rawka of Ujjain (M.P.) has achieved the unique distinction of being the youngest person in India to hold the three prestigious qualifications of Company Secretary, Chartered Accountant and Cost & Works Accountant. Young Abhishek has obtained these three qualifications at the age of just 22 years & 168 days. He also holds the distinction of being the youngest person to become a Company Secretary at the age of just 19 years and 330 days. Abhishek has a religious bent of mind and he regularly participates in various competitions oragnized at the temple.

Anula Chaudhary D/o Shri Anupam Chaudhary of Lalitpur (U.P.) has won the Third Prize at the prestigious ELECRAMA-2004. She receieved the award for her project "Automation Using Mobile Phone" in the students project contest. The award consisted of a citation & cash prize of Rs. 15,000/-. Anula represented Walchand Institute of Techmnolgy, Solapur where she is Final Year student of the B.E. (Electronics). Previosly she has completed her Diploma in Advanced Computing from C-DAC, Pune. She has also presented various technical papers like "Wireless Application Protocol" and "File Transfer Protocol" at the national level . Anula actively particpates in various extra curricualr activities and she has participated at state level debates. She also has been a member and treasurer of SPICMACAY.

Manjul Jain S/o Shri Jinendra kumar jain of Indore (M.P.) is not only a meritorious student, but also an excellent swimmer. Manjul received the first prize in the 100 mtr. Breast Stroke competition at the Aquatic Meet held at the Daly College, Indore. He also participated in the XX All India IPSC Aquatic Meet, held at Yadvindra Public School, Patiala. Manjul has also received the first prize at Miss Linnell Memorial Inter School Hindi Debate Competition, held at Welham Girls School, Dehra Dun. He is our Senior Awardee, who has received Young Jaina Award in 2003.

Smriti Jain D/o Shri Rajendra Jain of Raghogarh, Guna, (M.P.) is a meritorious student. She has topped the RGPV University in Bachelor of Pharmacy III Semester. Smriti is student of B. Pharma., V Semester at RKDF College of Pharmacy Bhopal. Smriti has a religious bent of mind and she follows the moral values like maintaining a vegetarian life style and daily visit to the temple. Smriti is our Senior Awardee who has recieved the Young Jaina Award in 2002.

Maitree Samoooh is proud of these young achievers and wish them very best for their bright and successful future.

आत्मान्वेषी : आचार्य श्री विद्यासागर

(दीक्षा-दिवस के प्रसंग पर)

आषाढ़ शुक्ला पंचमी वि. सं. २०६१, २३ जून २००४

कर्नाटक प्रान्त के बेलगाम जिले में सदलगा नाम का एक गाँव है। आपका जन्म इसी सदलगा गाँव के निवासी श्री मलप्पाजी अष्टगे और श्रीमतीजी अष्टगे के परिवार में १० अक्टूबर १९४६ को शरद पूर्णिमा के दिन हुआ। आपका बचपन का नाम विद्याधर था। आपका परिवार धन-धान्य से सम्पन्न था। आपको धार्मिक संस्कार अपने माता-पिता से मिले। जिनमंदिर जाना, जिनवाणी का अध्ययन करना, मुनिजनों की सेवा करना, दान-पुण्य आदि धर्म कार्यों में सदा तत्पर रहना—यह आपके माता-पिता की सहज दिनचर्या थी। आपके जन्म के पूर्व आपकी माँ ने स्वप्न में दो ऋद्धिधारी मुनियों को आकाश मार्ग से आते देखा, और अपने हाथों से उन्हें आहार भी दिया। मराठी में एक कहावत है—'मनी बसे स्वप्ने दिसे'—मन में जैसे भाव होते हैं वैसा ही स्वप्न दिखाई देता है। आपको पाकर आपकी माँ की भावनाएँ साकार हो गईं।

विद्याध्ययन के प्रति आपकी रुचि बचपन से ही थी। घर से स्कूल तक तीन मील दूर आप कंधे पर बस्ता डाले पैदल ही चले जाया करते थे। आपने प्राथमिक एवं उच्च स्कूली शिक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की। स्कूल से अवकाश मिलने पर आप घर में रहकर चौबीस तीर्थंकरों के नाम और भक्तामर स्तोत्र के श्लोक कण्ठस्थ किया करते थे। प्रतिदिन भगवान के दर्शन करके घर लौटने पर आप अपने छोटे भाई-बहनों को धर्म की अच्छी-अच्छी बातें सुनाया करते थे। अपने मधुर कंठ से स्तुति गाया करते थे।

आपको चित्रांकन का शौक था। रंगों का डिब्बा और तूलिका लेकर आप घर के किसी कोने में बैठ कर बड़े जतन से अपनी कल्पना को अंकित करते थे। आपकी एकाग्रता, संवेदनशीलता और कला-प्रवणता देखते ही बनती थी। लगभग नौ बरस की उम्र में जब आप माता-पिता के साथ शेडवाल ग्राम में विराजे चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के दर्शन करने गये, तब आपके निश्छल-निर्मल मन में वीतरागता के प्रति सहज लगाव उमड़ पड़ा। जो दिनोंदिन साधु संगति पाकर बढ़ता ही चला गया। आपने बीस बरस की युवा अवस्था में घर त्याग दिया और गुरु ज्ञानसागर जी मुनिराज के चरणों में रहकर जैनदर्शन, न्याय,

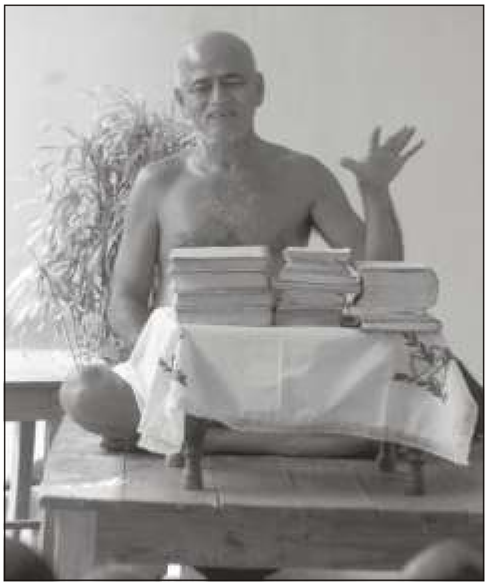

व्याकरण, साहित्य और अध्यात्म का अध्ययन किया। अल्पवय में ही आपकी उच्च साधना और ज्ञान को देखकर गुरु ज्ञानसागर जी ने राजस्थान के अजमेर नगर में आषाढ़ शुक्ला पंचमी वि. सं. २०२५, ३० जून १९६८ को आपको दिगम्बर मुनि दीक्षा प्रदान की और आपका नाम मुनिश्री विद्यासागरजी रखा गया।

आप संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, कन्नड़, आदि अनेक भाषाओं के जानकार हैं। आपने गुरुकृपा और सतत साधना के बल पर परब्रह्म परमात्मा को जान लिया है। वर्तमान में आप अपने विशाल मुनि संघ के नायक/आचार्य हैं। आपकी वीतराग-छवि से करुणा निरन्तर झरती रहती है।

आपका समूचा व्यक्तित्व सूरज की रोशनी की तरह उज्ज्वल और तेजस्वी है। आप अपने इन्द्रिय और मन पर विजय प्राप्त करने वाले निष्काम-साधक हैं। दिन में एक बार सद्गृहस्थ के द्वारा हाथ की अंजलि में दिया गया शुद्ध सात्विक आहार ग्रहण करना, लकड़ी के आसन पर अल्प निद्रा लेना, केशलुंचन करना, बालकवत् निर्विकार भाव से विचरण करना और शरीर के श्रृंगार, स्नान आदि से विरक्त रहना—यह आपके साधु जीवन की कठोर तपश्चर्या है। इतनी कठोर तपश्चर्या के बावजूद आप अत्यंत सरल, सहज और संवेदनशील हैं। आपके आत्मानुशासित जीवन में अद्भुत लयात्मकता सहज ही दिखाई देती है। आपकी नग्नता भीतर-बाहर एक-सा उज्ज्वल, निर्मल, और पारदर्शी होने का संदेश देती है। अल्पतम लेकर अधिकतम लौटाने का पाठ सिखाती है।

आत्म-साधना में लीन रहकर भी आप अपनी हित-मित और प्रिय वाणी से लोक-कल्याण में तत्पर रहते हैं। अनेक प्राचीन तीर्थस्थल आपका स्पर्श पाकर जीवन्त हो उठे हैं और आगामी पीढ़ी के लिए कुछ नए श्रद्धास्थल भी आपके शुभाशीष से आकार ले रहे हैं। समाज आपसे सही दिशा पाता है और युवाशक्ति आपके श्रीचरणों में नतशीष होकर सदाचार का पाठ सीखती है। संस्कारवान युवा देश की प्रशासनिक सेवाओं में अपना योगदान दे सकें, इसलिए उनके लिए प्रशिक्षण केन्द्र का संचालन आपके आशीर्वाद से सफलतापूर्वक किया जा रहा है। पशु-पक्षियों को जीवन दान देने वाली अनेक गौशालाएँ आपकी चरण-रज पाकर पवित्र हो गई हैं। सर्वमैत्री और करुणा का संदेश देने वाला भाग्योदय तीर्थ आपकी असीम कृपा का ही सुफल है।

- मुनि श्री क्षमासागर

क्या ये भी चले जाएँगे?

दुश्मन ने इस खेत को बंजर जमीन में तब्दील करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। परन्तु आजादी के उपरान्त इस बंजर धरती को कुछ आबाद करने के बाद सात खूबसूरत फूलों के पौधे लगाए गए। खेत के मालिक के पास इतने पैसे नहीं थे कि वह उन पौधों के लिए खाद, पानी तथा आधुनिक साधन खरीद सकता। फिर भी उस किसान ने दूसरे किसानों से कर्ज लेकर इन पौधों को बड़ा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। एक उम्मीद मन में किसानों के समक्ष प्रस्तुत हो सकता था। गर्व से सिर ऊँचा हो गया था उसका, फूलों को भी गर्व था अपने मालिक पर।

एक दिन किसान ने महसूस किया कि वे फूल अब इस बंजर जगह पर रहने से कतरा रहे थे। उन्हें तलाश थी किसी बगीचे की। किसान ने फूलों से विचार-विमर्श किया और यह निर्णय लिया कि वह उन फूलों की खुशी के लिए उन्हें अलग-अलग खूबसूरत बगीचों में भेज देगा और जब वे उन बगीचों के हरे-भरे भेजे। वे फूल भी जो कभी एक समय बगीचों में जाने के लिए बेताब थे, वे आज वहाँ रहकर वे खुश नहीं थे और वे अपने खेत वापस आना चाहते थे। जो आजादी, प्रेम और आदर उन्हें खेत में मिल रहा था, वह सब वहाँ नहीं था। परन्तु वहाँ प्राप्त होने वाले खाद, पानी और आधुनिक साधनों का लालच, उन्हें वापस खेत में आने से रोक रहा था।

वह किसान आज भी यही उम्मीद लगाए बैठा है कि वे फूल वापस अपने

लिए वह उन पौधों पर मेहनत करता रहा कि जब पौधे बड़े होकर फूल देंगे तब वह फूल उसके घर के आँगन को महका देंगे, उसकी शोभा बढ़ाएँगे, उस खेत को खूबसूरती प्रदान करेंगे जिसे दुश्मन ने तबाह कर दिया था और अंततः वह खेत बगीचे के समान नजर आएगा। उन सातों पौधों की भी तरीफ करनी होगी जो इतनी प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद भी बढ़ रहे थे।

आखिर आज वह दिन आ ही गया जिसका उस किसान को बेसब्री से इंतजार था। सातों पौधों में रंग-बिरंगे फूल! ऐसा सुकून मिलता था उन्हें देखकर मानो जीवन धन्य हो गया हो। अब तो वह भी दूसरे होने का रहस्य जान जाएँगे, तो उन्हें वापस बुलाकर अपने खेत को भी बगीचा बनाएगा।

बहुत समय बीत गया। फूल निरंतर उन सातों पौधों से आते गए और अन्य बगीचों में जाते रहे। किसान खुशी-खुशी उन्हें जाने देता। एक दिन जब किसान ने अन्य बगीचों से अपने खेत की तुलना की तो उसे अहसास हुआ कि वे बगीचे पहले से भी अधिक खूबसूरत नजर आ रहे थे और उसका खेत पहले जैसा ही थी। अब उसने सोचा कि वह उन फूलों को वापस अपने खेत में बुलाएगा और खेत को खूबसूरत बनाने का रहस्य जानेगा। उसने फूलों को वापिस लौट आने के कई संदेश खेत में आएँगे और उसकी शोभा बढ़ाएँगे। उम्मीद भरे मन से उन सात पौधों को सींचता है और सोचता है कि अब जो फूल खिलेंगे वे उसके सपने पूरे करेंगे और जैसे ही फूलों के आने के संकेत मिलता है, तो वह अपने उदास मन से उन नवोदित फूलों की ओर देखता है और स्वयं से यही प्रश्न करता है ''क्या ये भी चले जाएँगे?''

(यहाँ सात फूलों के पौधों का अर्थ सात आई.आई.टी. इंस्टीट्यूट से है।)

सौरभ जैन
आई.आई.टी., दिल्ली
(सीनियर अवार्डी)

The Truth About Traditions

उदुम्बर फल और विज्ञान
(Composite Fruits & Science)

जैनधर्म में उदुम्बर फल खाने का निषेध किया गया है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार इस प्रकार के फल सम्पूर्ण पुष्पक्रम (Inflorescence) से विकसित होते हैं। इसे Infructescence भी कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं — सोरोसिस (Sorosis) और साइकोनस (Syconus)। साइकोनस प्रकार के फल अर्थात् पीपल, गूलर, अंजीर (ficus carica), बरगद आदि के फलों में हाइपैन्थोडियम (hypanthodium) पुष्पक्रम पाया जाता है। जिसमें असंख्य छोटे-छोटे एकलिंगी पुष्प (Unisexual flowers) विशेष प्रकार की खोखले प्याले जैसी रचना (Receptacle) का निर्माण करते हैं। जिसके अगले भाग में एक छोटा सा छिद्र होता है जिसे ostiole कहते हैं। तीन शल्क (scales) इस छिद्र को घेरे रहते हैं। छिद्र के आस-पास नर और दूर पेंदी में मादा पुष्प लगे रहते हैं। इनमें परागण Blastophaga नामक मच्छर समान कीट (insect) से होता है। कीट (insect) छिद्र से होकर प्यालेनुमा रचना के अंदर जाता है और मादा पुष्पों के अण्डाशय (Ovaries) में अपने अण्डे देता है। कीट के अण्डे युक्त अण्डाशय फूले नजर आते हैं जो गाल पुष्प (Gall flower) कहलाते हैं। कुछ समय बाद अण्डों से बच्चे निकलकर प्यालेनुमा रचना की भीतरी सतह पर रेंगते हैं। जब ये बच्चे थोड़ा बड़े होकर नर पुष्प से होते हुए निकलते हैं तो परागकोष स्फुटित हो जाते हैं तथा परागकण इनके शरीर पर चिपक जाते हैं।

जब ये कीट दूसरे पुष्पाशय में जाते हैं तो उन पर लगे परागकण मादा पुष्प पर गिरकर परागण (Pollination) करा देते हैं। कीट परागण (Insect pollination) की इस प्रक्रिया में इन उदुम्बरक के अंदर कीट उत्पन्न होते रहते हैं, और कुछ कीट अविकसित या अर्धविकसित रूप में उदुम्बरक के भीतर ही मर जाते हैं।

इस तरह उदुम्बर फल (Composite fruits) खाने का निषेध करना विज्ञान-सम्मत सचाई है।

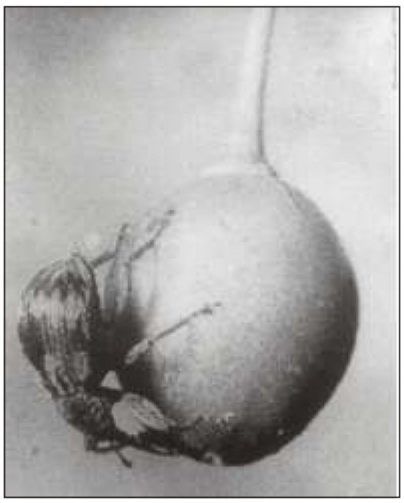

कीट (insect) द्वारा अंजीर (Fig) का परागण

भूमिगत वनस्पति और विज्ञान
(Underground Veg. & Science)

पौधे के कुछ भाग अपने सामान्य कार्यों से हटकर कुछ विशिष्ट कार्यों को करने के लिए अपने सामान्य रूप या आकार में अनुकूलन (Adaptation) द्वारा कुछ परिवर्तन कर लेते हैं। इसे रूपांतरण (Modification) कहते हैं। पौधे के लगभग सभी भागों जड़, तना, पत्ती, पुष्प आदि में रूपांतरण (Modification) पाया जाता है। यह रूपांतरण भोजन संग्रह (Food Storage), यांत्रिक सहारा (Support), श्वसन (Respiration), प्रकाशसंश्लेषण (Photo Synthesis), आदि कार्यों के लिए होता है।

जड़ और तने में रूपांतरण द्वारा प्राप्त होने वाली भूमिगत वनस्पतियाँ (Underground Veg.) खाने का निषेध जैन धर्म में किया गया है।

जड़ों में प्रमुख रूपांतरण दो प्रकार से होता है—मूसला जड़ों का रूपांतरण (Modification of Tab Roots) और अपस्थानिक जड़ों का रूपांतरण (Modification of Adventition Roots)। गाजर, मूली और शलजम—ये मूसला जड़ों के रूपांतरण से प्राप्त भूमिगत वनस्पतियाँ हैं। शकरकन्द, हल्दी आदि अपस्थानिक जड़ों के रूपांतरण से प्राप्त भूमिगत वनस्पतियाँ हैं।

तनों के भूमिगत रूपांतरण (Underground modification of stems) से प्राप्त होने वाली वनस्पतियों में अरबी, अदरक, कचालू, जिमीकन्द, प्याज, लहसुन, आलू आदि प्रमुख हैं।

बहुत वर्षों तक जीवित रहने के लिए तने भूमि के अंदर उत्पन्न होते हैं। जब

प्रतिकूल परिस्थितियाँ (Unfavourable condition) आती हैं तो ये तने सुसुप्तावस्था (Dormant stage) में ही भूमि में पड़े रहते हैं और अनुकूल परिस्थितियों (Favourable condition) के आने पर इनमें से नई शाखाएँ निकलती हैं और भूमि के ऊपर आती हैं।

प्रतिकूल परिस्थिति में जीवित रहने के लिए ये तने अपने अंदर भोजन का संग्रह भी करते हैं। भूमिगत तनों में पर्व सन्धियों पर कलिकाएँ (Bud) और शल्क पत्र (Scale leaves) पाए जाते हैं। तने और जड़ों के रूपांतरण से प्राप्त भूमिगत वनस्पतियों के अध्ययन से प्राप्त तथ्यों से जैन धर्म में इनके खाने का निषेध करने की विज्ञानसम्मत सच्चाई ज्ञात हो जाती है—

1. तने और जड़ों के रूपांतरण से प्राप्त भूमिगत वनस्पतियाँ अपने जीवित रहने के लिए तने या जड़ों में भोजन का संग्रह करते हैं। जिसे हम मूली, गाजर, प्याज, आलू आदि के रूप में खाने के काम में लेते हैं जिससे पूरा पौधा ही नष्ट हो जाता है। जबकि लौकी, गिलकी, आदि अन्य साग-सब्जी या फलों को प्राप्त करने के लिए पूरा पौधा नष्ट नहीं करना पड़ता।
2. सभी भूमिगत वनस्पतियाँ सीधे मिट्टी के संपर्क में रहती हैं, जिससे मिट्टी में मिलाए गए उर्वरक (Fertilizers) और कीटनाशक (Pesticides) उन्हें अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में जहरीला करते हैं, जो प्राणघातक हैं।
3. सामान्यतः जमीन के भीतर सूर्य-प्रकाश के अभाव में जीवाणु (Bacteria), कीट (Insects), आदि प्रचुर मात्रा में रहते हैं, और तनों व जड़ों में संचित भोज्य सामग्री के कारण उसके आसपास यह जीवाणु अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में उत्पन्न हो जाते हैं जो भूमिगत वनस्पतियों को उखाड़ते समय नष्ट हो जाते हैं।
4. When the underground stem becomes enlarged at the growing tips by the accumulation of stored food, commonly starch, tubers are producted e.g. Potato. The eyes of potato are nodes at each of which 1-3 buds are producted in the axile of small scale like leaves. Tubers are responsible for storing the food. At the skin of Potato a number of lenticels are present which help in the gaseous exchange. Potatoes are propagated by cutting of tubers. Each piece of tubers should contain an eye or node for vegetative propagation.

इस तरह हम देखें तो आलू में स्टार्च, लेन्टीसेल्स और आइवड्स—ये तीनों चीजें बैक्टीरिया और इन्सेक्ट्स की अधिकता को दर्शाती हैं। यही कारण है कि आलू में अधिक हिंसा होने की संभावना को देखते हुए जैनधर्म में उसके त्याग पर जोर दिया गया है।

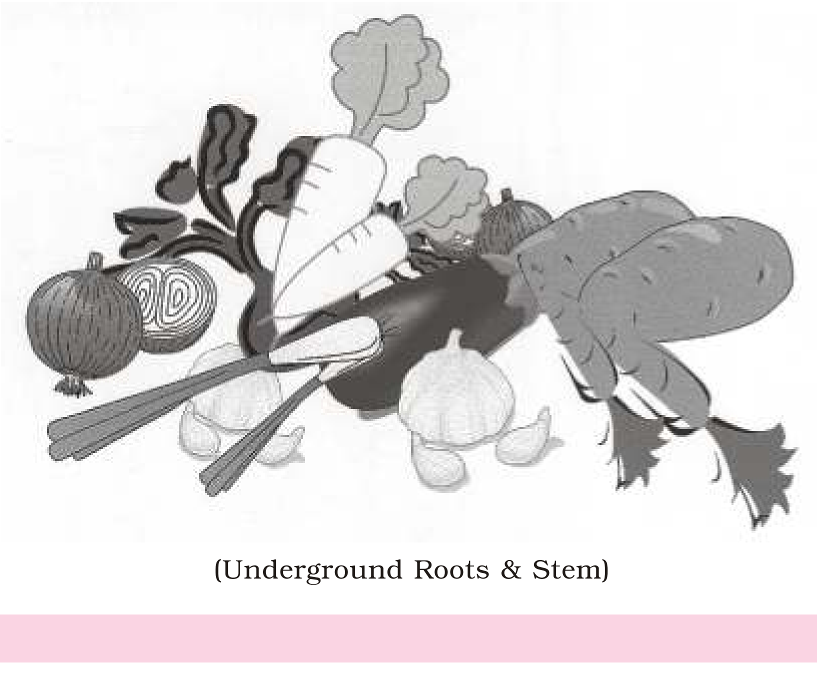

(Underground Roots & Stem)

आपके प्रश्न

Q. जैनधर्म में नित्य देवदर्शन को आवश्यक क्यों माना गया है? इससे क्या लाभ हैं? क्या मन में भगवान की छवि और पवित्र कर्म पर्याप्त नहीं हैं। **अमित गोयल**, कोटा (राज.)

A. जैन धर्म में अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, और साधुजनों को पूजनीय माना गया है। ये पाँचों हमारे आदर्श हैं। इनमें से अरहंत और सिद्ध की मूर्तियाँ जैनमंदिरों में विराजमान की जाती हैं। आत्मध्यान में लीन एक योगी की जैसी मुद्रा होती है वैसी ही मुद्रा इन मूर्तियों की होती है। चेहरे पर शान्ति, निर्भयता और निर्विकार-भाव स्पष्ट रूप से झलकता है। दर्शन करने वाले को ऐसा प्रतीत होता है कि वह ऐसी प्रशान्त आत्मा का दर्शन कर रहा है, जहाँ न राग है और न वैर-विरोध।

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ने लिखा है कि बचपन में हम जैसे माँ का हाथ पकड़ कर नदी में स्नान करने का आनंद लेते हैं। ऐसा ही है भगवान की मूर्ति का दर्शन!! हम भगवान की मूर्ति का दर्शन करते हैं तो मानो माँ का हाथ पकड़ कर गंगा स्नान करते हैं।

हमारे भीतर इस पार्थिव देह में चैतन्य की विशाल और तेजस्वी धारा निरन्तर बहती रहती है पर अपनी ही बहिर्मुखता में डूबे हम उस धारा में उतर नहीं पाते, उसके स्पर्श का आनंद नहीं ले पाते। जब कभी हम अपनी बहिर्मुखता को भगवान की मूर्ति में स्थिर करके भीतर बहती चैतन्य की उस धारा का एक नन्हा-सा स्पर्श पा लेते हैं वही दर्शन है। इस तरह मूर्ति, मंदिर और तीर्थस्थल का दर्शन और उसका परम पवित्र सामीप्य हमारी आन्तरिक एकाग्रता और पवित्रता को बनाए रखने में सहायक है। जैनों में मूर्ति पूजा का अर्थ मात्र मूर्ति की पूजा नहीं है बल्कि उस आदर्श की पूजा है जो प्रत्येक जीव का सर्वोच्च लक्ष्य है। मूर्ति के दर्शन-पूजन-वंदन से हमें अपने आदर्श के समान बनने की प्रेरणा मिलती है और अपने आदर्श की एक छवि हमारे मानस-पटल पर उभरती है और अनायास ही चेतना रूपांतरित (Transform) होने लगती है। निरन्तर पवित्रता का दर्शन हमारी आंतरिक मलिनता को हटाने का अत्यन्त आसान उपाय है।

इस तरह हमने जाना कि मन में भगवान की छवि और पवित्र कर्म ही जीवन को सजाने/सँवारने के लिए पर्याप्त नहीं है बल्कि भगवान की वीतराग मुद्रा का निरन्तर दर्शन भी अनिवार्य है। हम स्वयं विचार करें कि वीतराग भगवान का मन ही मन स्मरण करके और उनके द्वारा बताए गए पवित्र-कर्म करके हम अपने जीवन का विकास करते हैं; तब क्या दिन भर में एक बार सहज उपलब्ध होने पर या अल्प प्रयत्न करके हम उन वीतराग भगवान के प्रतिबिंब का साक्षात् दर्शन करना और उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना नहीं चाहेंगे।

हम जानते हैं और रोज देखते भी हैं कि अपने रहने के लिए घर तो पशु-पक्षी भी बना लेते हैं लेकिन शाश्वत जिनमंदिरों के अनुरूप अपने हाथों जिनमंदिर बनाने या बनवाने का सौभाग्य मात्र मनुष्य को प्राप्त है। मंदिर एक ऐसा पवित्र स्थान है जहाँ बैठकर हम भगवत्ता का एहसास कर सकते हैं। जहाँ बैठकर हम अपने भीतर सोई हुई भगवत्ता को जाग्रत कर सकते हैं। जो मंदिर की संरचना के पीछे छिपे उद्देश्य को उसकी कला व स्थापत्य को और उसके विज्ञान को जानते हैं; वे अनुभव करते हैं कि मंदिर का गगनचुंबी शिखर, मंदिर के छोटे-छोटे कलात्मक खिड़की-दरवाजे, विभिन्न कलाकृतियों से सुशोभित दीवारें व खंबे, मंदिर के प्रवेश-द्वार पर स्थित घंटी, और भगवान के सम्मुख समर्पित की जाने वाली पवित्र सामग्री, दीप, धूप, आदि सभी महत्त्वपूर्ण हैं। मंदिर के गुम्बज से टकराकर गूँजती ओंकार ध्वनि, घंटे का नाद और पूजा के भावभीने स्वरों में समूचे वातावरण को ही नहीं बल्कि हमारे तन-मन-प्राणों को पवित्र, शांत और ऊर्जावान बनाने की सामर्थ्य है। आवश्यकता सिर्फ इस बात की है कि हम मंदिर की महत्ता को पहचान कर उससे लाभान्वित होने का प्रयत्न करें।

Q. हम बच्चे अपने दैनिक जीवन में छानकर पानी पीने की प्रक्रिया कैसे सम्पन्न करें?
मयंक जैन, जबलपुर (म.प्र.)

A. पानी छान कर पीना अहिंसा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, और पर्यावरण संरक्षण, इन सभी दृष्टियों से श्रेष्ठ है। जैनधर्म के अनुसार पानी छान कर उसके शेष भाग को उसी जलस्रोत तक पहुँचाना अनिवार्य है जिससे पानी निकाला गया है। यह प्रक्रिया अहिंसा और पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। 'नारू' नामक रोग के संक्रमित होने का प्रमुख कारण बिना छना प्रदूषित जल ही है।

असल में, पानी छानने का उद्देश्य जीव-रक्षा की कोमल भावना को विकसित करना भी है। पानी छानते समय मात्र कपड़े का छन्ना (Filter Cloth) ही नहीं बल्कि करुणा और दयाभाव का छन्ना भी लगाना आवश्यक है। अपने प्राणों की रक्षा में सहायक जल को इस तरह सावधानी से उपयोग में लें जिससे उसके आश्रित जीवों (Insects) का विनाश न हो।

दैनिक जीवन में पानी छानने की प्रक्रिया को हम प्रत्येक परिस्थिति में आसानी से मेनेज कर सकते हैं। इसके दो आसान तरीके हैं—

1. घर में पीने का पानी उपयोग में लेते समय छान लें और घर से बाहर जाते वक्त अपने साथ छने पानी से भरा वाटर-बैग रखें।

2. पानी छानने का साफ-सुथरा कपड़ा सदा साथ रखें, और आवश्यकता पड़ने पर उससे पानी छानें।

3. बिसलरीज का मिनरल वाटर भी प्रदूषित हो सकता है इसलिए जहाँ तक संभव हो सके पानी के प्राकृतिक स्रोत से स्वयं साफ-सुथरा जल ग्रहण करें।

मेरा ऐसा मानना है कि एक बार हम पानी छान कर पीने का संकल्प ले लें तो प्रारंभ में थोड़ी कठिनाई अवश्य होगी पर धीरे-धीरे पानी छानने की प्रक्रिया सहजता से होने लगेगी और हम स्वयं अच्छा महसूस करेंगे।

Q. मेरे एक मित्र का मानना है कि जैन धर्म सम-सामयिक (Up-to-date) नहीं है, ईसाई-धर्म लोगों की अधिक सेवा कर रहा है। मुनिश्री इस बारे में आप हमें मार्गदर्शन दें?

— **स्वप्निल जैन**, छिंदवाड़ा (म. प्र.)

A. जो जीवन और जीवन के विकास के लिए हमें समीचीन दृष्टि दे और जीवन की हर समस्या का शाश्वत समाधान दे, वास्तव में वही सच्चा धर्म है। आइए, इस संदर्भ में जैनधर्म की उपयोगिता पर विचार करें। जैनधर्म के अनुसार अपने जीवन का विकास करने और परमात्मा बनने की क्षमता सभी जीवों में समान रूप से विद्यमान है। प्रत्येक जीव श्रद्धा, ज्ञान और सदाचरण के मार्ग को अपनाकर अपने जीवन को स्वयं विकसित कर सकता है। व्यक्ति अपने को पहचान ले और अपने अंदर की शक्तियों का उसे इतना अच्छा ज्ञान हो कि वह उसका उपयोग अपने और समूचे जगत की भलाई के लिए कर सके। जीवन के विकास की यह दृष्टि व्यक्ति को उसकी जिम्मेदारी का एहसास कराती है और उसे आत्म-विकास की प्रेरणा भी देती है।

जीवन के विकास का अर्थ मात्र भौतिक संसाधनों की प्राप्ति नहीं है, बल्कि स्वयं को आत्मिक और भावनात्मक (Spiritual & Emotional) रूप से विकसित करना ही जीवन का वास्तविक विकास है। जैनधर्म व्यक्ति के आत्मिक-विकास को सर्वाधिक महत्व देता है। आध्यात्मिक-चेतना से युक्त व्यक्ति संवेदनशील, सरल-सहज और कष्ट-सहिष्णु होता है। वर्तमान में बढ़ती हुई पारस्परिक विषमता, जातिगत टकराहट, भाषागत-विभेद, प्रतिस्पर्धा आदि को कम करने के लिए व्यक्ति का आध्यात्मिक रूप से विकसित होना जरूरी है। परस्पर विचार भिन्नता होने पर भी व्यापक, उदार, और निराग्रही दृष्टि रखने की बात जैनधर्म में आती है जिसके माध्यम से परिवार, समाज, राष्ट्र, और व्यक्ति-व्यक्ति के मध्य बढ़ते हठाग्रह, अहंकार, और दुर्भावना को कम किया जा सकता है, और परस्पर प्रेम व सद्भाव को बढ़ाया जा सकता है। जैन मनीषियों द्वारा दिया गया अहिंसा, दया, करुणा, और सेवा का विचार इतना व्यापक है, कि वह हमें स्वजनों, मित्रों और यहाँ तक कि अपरिचितों, पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों तक से प्रेम और सद्भाव रखना सिखाता है।

आज व्यक्ति के दुखी होने का प्रमुख कारण नैतिक पतन और बुरी आदतें, जैसे—जुआ, शराब, मांसभक्षण आदि हैं। इसलिए अभावग्रस्त व्यक्ति को केवल रोटी, कपड़ा, धन-पैसा, आदि दे देना उसकी समस्या का शाश्वत समाधान नहीं है और न ही वह सच्ची सेवा, दया व करुणा है। उसे आत्मनिर्भर, परोपकारी और सदाचारी बनाना ही सच्ची सेवा है। जैन धर्म ऐसी ही सेवा में विश्वास रखता है और वर्तमान में जैन धर्मानुयायी अधिक आत्मनिर्भर और सदाचारी हैं।

वर्तमान युग में दया और सेवा का नजरिया बदल गया है। व्यक्ति की भौतिक जरूरतों की पूर्ति करके और उसे जिस किसी तरह प्रभावित करके धर्मान्तरण के लिए प्रेरित करने की दुष्प्रवृत्ति निरंतर बढ़ रही है। जिसे हम भारतवासी सेवा या मानवीयता का पाठ सिखाने वाला धर्म मान रहे हैं वह वास्तव में एक छलावा है।

एक ओर मानवता और सेवा के नाम पर धर्मान्तरण की इच्छा से व्यक्ति को धन, पैसा और धर्म की पुस्तकें वितरित करना और दूसरी ओर अपने शिक्षा-संस्थानों में भारतीय बच्चों को उनकी मातृभाषा के प्रति हीनता का भाव उत्पन्न करना, हिन्दी भाषा को गरीबों की भाषा कहना (हिन्दी इज ए पुअर लेंग्वेज एण्ड पुअर्स लेंग्वेज) भारतीय संस्कृति और धर्म की अवमानना है। जीवदया और सेवा भाव रखने वाला कोई भी धर्म क्या

जीवों की हिंसा से प्राप्त मांस, मदिरा आदि का सेवन करने की स्वीकृति दे सकता है। भारतीय मूल का कोई भी धर्म इसका समर्थन नहीं करता।

एक कॉन्वेंट स्कूल की घटना आपको सुनाता हूँ। वहाँ पढ़ने वाले बच्चों को एक दिन पिकनिक पर ले जाया गया। सभी बच्चों ने खूब एन्जॉय किया। जब वापिस आने का समय हुआ तो बच्चों की स्कूल-बस बिगड़ गई, सभी चिंतित हो गए। फादर ने बच्चों से कहा कि तुम अपने-अपने ईश्वर का नाम लो, शायद स्कूल-बस ठीक हो जाए। सभी बच्चों ने अपने-अपने भगवान का नाम लिया, पर स्कूल-बस ठीक नहीं हुई। तब बच्चों से कहा गया कि तुम सब मिलकर जीसस का नाम लो। भोले-भाले, नन्हे-मुन्ने बच्चों ने जैसे ही जीसस का नाम लिया बस ठीक हो गई। यह बच्चों के साथ किया गया छलावा था। जीसस को महिमामय बताने और अन्य महापुरुषों को प्रभावहीन साबित करने का यह षड्यंत्र बच्चों के कोमल मन पर कितना गलत प्रभाव डालेगा—यह विचारणीय है। क्या यही सेवा और दया है?

जैन धर्म अत्यंत व्यावहारिक और सम-सामयिक धर्म है। वह सबके विकास की सही दिशा बताता है। वह अल्पतम लेकर अधिकतम देने की जीवन पद्धति सिखाता है। 'सभी में अपने विकास की पूर्ण क्षमता है'—ऐसा विचार विकसित करके सभी के प्रति प्रेम और सहानुभूति रखना, सद्व्यवहार करना, सदाचार का पालन करना और अपने जीवन का विकास करते हुए सभी के विकास में सहयोगी बनना—यह जैनधर्म का व्यावहारिक एवं समसामयिक (Practical & Up-to-date) रूप है।

(मुनिश्री क्षमासागरजी द्वारा प्रदत्त समाधान)

ALL INDIA

YOUNG JAINA AWARD

23- 24 OCTOBER 2004, ASHOKNAGAR, M.P.

Like previous years, this year again Maitree Samooh is organizing the award ceremony to felicitate Jain students who have achieved academic excellence. The award ceremony will be held on 23rd and 24th October 2004 at Ashoknagar (M.P.) in the auspicious presence of Munishri Kshamasagarji Maharaj and Munishri Bhavyasagarji Maharaj, devout disciples of Acharya Shri Vidyasagarji Maharaj.

The Jain Students, who have secured 85% and 75% or more marks in 10th and 12th class, respectively in the year 2004, can send in their applications on the format prescribed by Maitree-Samooh.

The minimum percentage requirement can be relaxed for the students who have received national award in sports or a place in the merit list of their state or educational board.

The Last Date For Application Is 1st September 2004

Maitree Samooh will not be bound to include the names of those students in the merit list whose applications are received after the last date.

Application forms can be obtained from Maitree Samooh or they can be downloaded from our website www//kshamasagarji.com . It is mandatory to staple two passport size photographs (one colour and one black & white) along with the application form.

Address For Sending The Application Forms
Maitree Samooh
C/o Shri P. L. Benara
1/205, Professors Colony
Hari Parvat, Agra-282002 (U.P.)
Tel. : 0562-2151127
Mobile : 98370-25087
E-mail : benarabearings@yahoo.co.in

Note : All the senior awardees are requested to kindly disseminate the information about this award function in their institutions and localities and help the new students in filling up the application forms.

निवेदन

- मैत्री समूह के द्वारा विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी शिक्षा के क्षेत्र में समूचे भारत वर्ष के विशिष्ट योग्यता प्राप्त करने वाले जैन छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह (यंग जैना अवार्ड-2004) परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के परमशिष्य मुनिश्री क्षमासागरजी एवं मुनिश्री भव्यसागरजी के पावन सान्निध्य में 23-24 अक्टूबर, 2004 को अशोकनगर (म.प्र.) में आयोजित किया जावेगा। सन् 2004 में 10वीं कक्षा में 85% एवं 12वीं कक्षा में 75% से अधिक अंक अर्जित करने वाले जैन छात्र-छात्राएँ यंग जैना अवार्ड-2004 के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदन-पत्र न्यूज लेटर के साथ पहले भेजा जा चुका है। आप सभी सीनियर अवार्डीज से निवेदन है कि आप अपने क्षेत्र में अवार्ड की जानकारी दें एवं जैन छात्र-छात्राओं को आवेदन-पत्र उपलब्ध कराने में सहयोग प्रदान करें।
- यंग जैना अवार्ड-2004 की न्यूज अपने स्थानीय पत्र-पत्रिका में प्रकाशित करा के हमारा सहयोग करें।
- यंग जैना अवार्ड (2001, 2002, 2003) पाने वाले सभी जैन छात्र-छात्राएँ पिछले वर्षों में प्राप्त होने वाली अपनी उपलब्धियों से हमें अवश्य अवगत कराएँ। अपने इन्स्टीट्यूट में आपने खेलकूद, संगीत या अन्य किसी भी गतिविधि में कोई सर्टिफिकेट या अवार्ड प्राप्त किया हो तो सर्टिफिकेट की फोटोकॉपी एवं अपना फोटोग्राफ (नाम व रजिस्ट्रेशन नं. सहित) हमें प्रेषित करें ताकि उसे न्यूज लेटर में प्रकाशित किया जा सके।
- सीनियर अवार्डीज न्यूज-लेटर में प्रकाशित की जाने योग्य स्वरचित या अन्य अच्छे लेखक द्वारा रचित श्रेष्ठ सामग्री हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में हमें प्रेषित करें।
- 'Chirping Sparrow' का यह तीसरा अंक आपके पास पहुँच रहा है। आपको हमारा यह प्रयास कैसा लगा? आप अपनी प्रतिक्रिया व सुझाव लिखकर हमें अवश्य प्रेषित करें। ताकि हम इसे और अधिक अच्छा बना सकें।

The students who have secured high percentage (75% or above) in 12th class and are finding it difficult to pursue their future education due to their financial condition, can apply for MAITREE SAHYOG .

The application forms for Maitree Sahyog can be obtained from:

Maitree Samooh
C/o Shri P.L. Benara
1/205, Professors Colony,
Hari Parvat, Agra-282002 (U.P.)
Tel. : 0562-2151127
Mobile : 98370-25087
E-mail :
benarabearings@yahoo.co.in

For continous interaction and fruitful information please join these groups

For Engineering Students
jain_engg@yahoogroups.com
For all Students
jain_students@yahoogroups.com

Chirping Sparrow

Chirping Sparrow is published quarterly by the Maitree Samooh. It is circulated to all Young Jaina Awrdees and the friends of Maitree Samooh.

Editorail Board

- **S. L. Jain**
  Ex-Executive Director
  Bhopal.
- **Suresh Jain**, I.A.S. (Retd.)
  Bhopal.
- **Y.K Jain**
  Dy. Chief (S&T. Engg.)
  W. Railway, Mumbai.
- **P.C. Jain**
  Ex. Professor, Vidisha.
- **P.L. Benara**
  Chairman Benara
  Indus.Agra.
- **R.K. Badjatya**
  Ex. V. P. DSCL Kota.
- **Subhash Jain,** B.E.
  Anil Industries
  Bina (M.P.).

Address for corrospondence

Maitree Samooh
C/o Shri Suresh Jain,
I.A.S.
30, Nishat Colony,
T.T. Nagar, Bhopal
Phone : (0755) 2555533,
2763077, 94250-10111

E-mail
maitreesamooh@hotmail.com
maitreesamooh@yahoo.com
Website
www//kshamasagarji.com

Ashoknagar Contact No.
94251-32090

आपके पत्र

◆ न्यूज लैटर प्राप्त हुआ, जिसे पढ़कर मन प्रफुल्लित हो उठा। वैसे मैं रोज अपना अवार्ड देखकर आयोजित कार्यक्रम की याद कर लेता हूँ। इस वर्ष कक्षा दसवीं का परीक्षा परिणाम कमजोर रहा है, इसलिए मैं मैत्री समूह को यह सुझाव देना चाहूँगा कि कक्षा दसवीं के लक्ष्य को 85% से कम करने का विचार अवश्य करें ताकि खराब परीक्षा परिणाम के बावजूद लक्ष्य के नजदीक आने वाले विद्यार्थी इस भव्य आयोजन में सम्मिलित हो सकें।

इस वर्ष मैंने B.Com. प्रथम वर्ष की परीक्षा पास की है। मैं अवार्डी के रूप में वर्ष 2004 में होने वाले यंग जैना अवार्ड में सम्मिलित तो नहीं हो सकूँगा, लेकिन आयोजन को देखने की मेरी तीव्र इच्छा है। कृपया बताएँ कि मैं इस आयोजन में किस प्रकार सम्मिलित हो सकता हूँ।

वैभव जैन, दमोह (म.प्र.)

◆ मुझे आपके समाचारपत्र **Chirping Sparrow** का दूसरा अंक प्राप्त हुआ। उसे पढ़कर बहुत अच्छा लगा। मुनिश्री के द्वारा दिए गए प्रश्नों के उत्तर अत्यन्त ज्ञानवर्धक हैं। आप इसी तरह की जानकारी देकर हमारा मार्गदर्शन करते रहें, ऐसी भावना है।

रोहित कोठारी
मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर (राज.)

◆ **Chirping Sparrow** का दूसरा अंक प्राप्त हुआ। आपका यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय है। इसके द्वारा हम सभी अवार्डीज को नई जानकारी मिलती है और मार्गदर्शन भी। यदि आप समाचार-पत्र के साथ समय-समय पर होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं (Competitive Exam.) की जानकारी देते रहे तो बड़ा उपयोगी रहेगा।

देवश्री बड़जात्या
कुचामन सिटी, नागौर (राज.)

◆ आपके द्वारा भेजे गए **Chirping Sparrow** के दोनों अंक मुझे प्राप्त हुए। जिसे पढ़कर मुझे और मेरे परिवारजनों को बहुत प्रसन्नता हुई। आप प्रतिभाओं को उभरने का अवसर देकर और उन्हें धर्म से जुड़े रहने की प्रेरणा देकर अत्यन्त सराहनीय कार्य कर रहे हैं। इससे निकट भविष्य में संस्कारवान जैन युवा उच्च पदों पर आसीन होंगे और मुनिश्री का स्वप्न साकार करेंगे। मेरे स्वयं के लिखे गीत, मुक्तक आदि क्या न्यूज लैटर में प्रकाशित हो सकते हैं? यदि आप हम बच्चों की रचनाएँ भी प्रकाशित करेंगे तो हमारा मनोबल बढ़ेगा।

श्वेता जैन
बीना, सागर (म.प्र.)

◆ **Chirping Sparrow** का नया अंक पढ़ा। मन में बहुत खुशी हुई। मैत्री समूह हम बच्चों के लिए इतना प्रोत्साहन दे रहा है और हम सदा मैत्री समूह से जुड़े रहेंगे यह बात मन को बहुत सुख देती है, इसका वर्णन हम शब्दों में नहीं कर सकते हैं। हमारा सम्पर्क लगातार बना रहे इसके लिए हम चाहते हैं कि यह पत्रिका प्रत्येक माह प्रकाशित हो। इस हेतु आप अपेक्षित मूल्य भी रख सकते हैं। हम तो किसी भी तरह मुनिश्री के विचारों से और आप सबसे जुड़े रहना चाहते हैं।

जैन दर्शन वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखता है। आपने इस पत्रिका के माध्यम से जैन धर्म में मान्य परम्पराओं, जैसे शाकाहार करना, रात्रि भोजन नहीं करना आदि का वैज्ञानिक दृष्टिकोण देकर बड़ा उपकार किया है।

अमित गोयल एवं **ज्योति जैन**
कोटा (राज.)

◆ **Chirping Sparrow** बहुत अच्छा लघु समाचारपत्र है। बहुत सच लिखा है कि चिड़ियों का चहचहाना जितना सहज और सरल होता है वैसा ही हमारा जीवन सहज और सरल हो। बच्चों के प्रश्नों का समाधान फिर प्रेरक प्रसंग कहीं जीवन को एक संतोष और प्रेरणा देते हैं। मुखपृष्ठ पर छपी प्रेरक-कथा पढ़कर लगा कि काश! हम थोड़ा संभल जाएँ उस इंसानियत को पाने के लिए जो प्राणी मात्र से हमें जोड़े रखती है।

अरुणा जैन, वाशी नगर, नई मुम्बई

◆ I Received the second edition of the news letter Chirping Sparrow. The news letter was really a nice & valuable letter. I had neglected the first edition because it was full of the reports of YJA-2003. So, I considered it same as most other booklets but when I had a reading of Q&A column of second edition, it made me to read the full letters in a single sitting.

The title of news letter and colour combination is very impressive.

The scientific reasons behind the meal before sunset had helped very much to understand its importance and to give explanation behind tradition to my non-Jain friends. Please. Continue this column in future editions.

The dual language of the letter is a new and appreciable idea, it make letter interesting and joyful, friendly for youths. Maitree samooh's works are really encouraging the youths and help in bringing youths near to their religion.

If we observe Jainism carefully we find that Jainism is not only a religion but it is a art of living. Actually it deals with the correct way of living following the main principle of live & let live.

The Q&A column is the most appreciable column. I feel pleasure to inform you that after reading the Q&A (on Egg) my teacher of biology has decided to re-think about her egg eating. Please increase the number of questions up to at least eight and increase the frequency of news letter make it at least bimonthly, since this news letter is not only helpful for Jains but for non-Jains also.

Mayank Jain, Jabalpur (M.P.)

असफलता से विचलित न हों

परीक्षा में फेल हो जाने पर अनेक विद्यार्थियों ने आत्महत्या कर ली है, ऐसे समाचार परीक्षा परिणामों के बाद अखबारों में छप रहे हैं। फेल हो जाने पर आत्महत्या जैसा गंभीर कदम उठाना अत्यन्त दु:खद एवं सोचनीय विषय है। और ये घटनायें तरुणों एवं युवाओं में बढ़ रही हताशा, निराशा एवं अवसाद को उजागर करती हैं।

युवाओं में बढ़ती इस आत्मघाती प्रवृत्ति के लिए वे अकेले दोषी नहीं हैं, इसमें परिवार एवं समाज का नजरिया अधिक दोषी है। समाज व्यक्ति की बुद्धिमत्ता एवं प्रतिभा का मूल्यांकन उसके पास/फेल होने के परिणाम से करने लगा है। सफलता को श्रेय देना एवं असफलता को हेय समझना आज हर आदमी की आम प्रवृत्ति बन गई है। आखिर युवा, जिनके सामने जीवन में कुछ कर गुजरने के अनेक अवसर आने वाले हैं, एक परीक्षा को ही जीवन का अन्तिम पड़ाव क्यों मान बैठे हैं? इस विषय पर शिक्षाविदों, चिन्तकों, मनोवैज्ञानिकों एवं समाज-सुधारकों को गंभीर चिंतन करना चाहिए। भविष्य में आत्महत्याओं की ऐसी दु:खद घटनायें न हों, इस हेतु प्रयास किये जाने चाहिए। माता-पिता एवं अभिभावकों का यह विशेष दायित्व है कि वे अपने पालकों को असफलता से विचलित न होने हेतु मनोवैज्ञानिक ढंग से तैयार करें और असफलता से सीख लेकर सफलता के सोपान चढ़ने हेतु प्रेरित करें।

जीवन में सफलता की कसौटी केवल परीक्षा पास कर लेना ही नहीं है। प्रतिभा किसी प्रमाण-पत्र की मोहताज नहीं होती। बिना परीक्षा पास किये भी जीवन में बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है, ऐसा सोच युवाओं में लाया जाना चाहिए। जीवन की महत्ता समझाने हेतु आध्यात्मिक अभिरुचि जागृत की जानी चाहिए। उन्हें श्रेष्ठ लेखकों का साहित्य एवं महापुरुषों का जीवन-चरित्र पढ़ने हेतु प्रेरित करना चाहिए। कोर्स के अतिरिक्त सत्साहित्य पढ़ने से युवाओं में एक नई चेतना जागेगी और जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण बदलेगा। परिणामस्वरूप युवा आशावादी एवं सकारात्मक सोच अपनायेंगे। और छोटी-मोटी असफलतायें उन्हें विचलित नहीं कर पायेंगी।

Chirping Sparrow

April to June, 2004

BOOK POST

To,

मैत्री समूह

From :
MAITREE SAMOOH
C/o **Shri P. L. Benara,** B.E. (Mech.)
1/205, Professors Colony, Hari Parvat, AGRA-282 002 (UP)
Tel. : 0562-2151127, (O) 98370 25087 • E-mail : benarabearing@yahoo.co.in